पाश्चात्य समाजशास्त्री - एक परिचय

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» समाजशास्त्र का उद्भव: क्रांतिकारी परिवर्तन

प्रश्न 1 (आसान). ज्ञानोदय में किस पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया था?
उत्तर – तर्क और विवेक पर।

प्रश्न 2 (आसान). फ्रांसीसी क्रांति के तीन प्रमुख नारे क्या थे?
उत्तर – स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व।

प्रश्न 3 (मध्यम). औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में कौन से दो बड़े बदलाव आए, जिनका समाजशास्त्र के लिए महत्व है?
उत्तर – बड़े कारखानों का जन्म, शहरीकरण, और मज़दूर वर्ग का उदय। लोगों के काम करने और रहने के तरीके में बड़ा बदलाव आया, जिससे समाज में नई समस्याएँ और संरचनाएँ सामने आईं।

प्रश्न 4 (कठिन). इन तीनों क्रांतियों ने यूरोप के साथ-साथ 'पूरे विश्व को भी कैसे प्रभावित किया'?
उत्तर – यूरोप के औपनिवेशिक विस्तार के कारण, इन क्रांतियों के विचार और प्रभाव (जैसे पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक उद्योग, मानवाधिकार की अवधारणा) यूरोप से बाहर भी फैले और अन्य समाजों में भी बदलाव की प्रेरणा बने।

» ज्ञानोदय (प्रबोधन) और वैज्ञानिक क्रांति

प्रश्न 5 (आसान). ज्ञानोदय को किस युग के रूप में जाना जाता है?
उत्तर – विवेक के युग (Age of Reason)

प्रश्न 6 (आसान). ज्ञानोदय ने मनुष्य की किस विशेषता को प्रमुखता दी?
उत्तर – विवेकपूर्ण (rational) और आलोचनात्मक (critical) सोच को।

प्रश्न 7 (मध्यम). ज्ञानोदय के दो प्रमुख परिणाम क्या थे?
उत्तर – धर्मनिरपेक्षता का उदय और वैज्ञानिक सोच का विकास।

प्रश्न 8 (कठिन). ज्ञानोदय ने किस प्रकार मनुष्य को स्वयं को देखने का तरीका बदल दिया?
उत्तर – ज्ञानोदय ने मनुष्य को ब्रह्मांड के केंद्र में रखकर और उसकी विवेकपूर्ण, आलोचनात्मक सोच की क्षमता को महत्व देकर उसे 'ज्ञान का पात्र' बना दिया, जिससे उसने स्वयं को एक स्वतंत्र और तर्कशील 'व्यक्ति' के रूप में देखना शुरू किया।

» फ्रांसीसी क्रांति और राजनीतिक संप्रभुता

प्रश्न 9 (आसान). फ्रांसीसी क्रांति किस वर्ष हुई थी?
उत्तर – 1789

प्रश्न 10 (आसान). फ्रांसीसी क्रांति के मुख्य तीन नारे क्या थे?
उत्तर – स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व

प्रश्न 11 (मध्यम). राजनीतिक संप्रभुता' से आप क्या समझते हैं, जैसा कि फ्रांसीसी क्रांति के संदर्भ में देखा गया?
उत्तर – राजनीतिक संप्रभुता का अर्थ है कि शासन करने की अंतिम शक्ति राजा या किसी विशेष वर्ग के बजाय 'जनता' के पास होती है। फ्रांसीसी क्रांति ने इस विचार को स्थापित किया कि लोग ही अपने शासकों का चुनाव करेंगे और कानून बनाएंगे।

प्रश्न 12 (कठिन). ज्ञानोदय' की अवधारणा ने 'फ्रांसीसी क्रांति' को कैसे प्रभावित किया, खासकर 'मानवाधिकारों की घोषणा' के संदर्भ में?

उत्तर – ज्ञानोदय ने लोगों को तर्क और विवेक का उपयोग करके स्थापित मान्यताओं पर सवाल उठाना सिखाया। इसी सोच के कारण लोगों ने 'जन्मजात विशेषाधिकारों' को गलत ठहराया और सभी मनुष्यों के 'बराबर' होने का विचार सामने आया। 'मानवाधिकारों की घोषणा' सीधे इसी ज्ञानोदय की सोच का परिणाम थी, जिसने व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता को सार्वभौमिक अधिकार बताया, न कि किसी शासक की देन।

» औद्योगिक क्रांति और सामाजिक परिवर्तन

प्रश्न 13 (आसान). औद्योगिक क्रांति की शुरुआत किस सदी में और किस देश में हुई थी?

उत्तर – औद्योगिक क्रांति की शुरुआत 18वीं सदी के उत्तरार्ध में ब्रिटेन में हुई थी।

प्रश्न 14 (आसान). स्पिनिंग जेनी किस काम आती थी?

उत्तर – स्पिनिंग जेनी सूत कातने की एक मशीन थी, जिसने औद्योगिक उत्पादन को बहुत बढ़ाया।

प्रश्न 15 (मध्यम). औद्योगिक क्रांति के कारण शहरों में क्या मुख्य बदलाव आए?

उत्तर – औद्योगिक क्रांति के कारण शहरों में तेज़ी से 'शहरीकरण' हुआ, विशाल कारखाने बने, और काम की तलाश में लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में आकर बस गए, जिससे भीड़ और सामाजिक विषमताएँ बढ़ीं।

प्रश्न 16 (कठिन). औद्योगिक क्रांति ने 'श्रम और बाज़ार के संगठन' को किस प्रकार बदला?

उत्तर – औद्योगिक क्रांति ने श्रम को 'विशाल कारखानों' में संगठित किया, जहाँ बड़ी संख्या में मज़दूर एक साथ काम करते थे। बाज़ार का विस्तार हुआ और उत्पादन सिर्फ स्थानीय खपत के लिए नहीं, बल्कि 'पूरे विश्व के बाज़ारों' के लिए बड़े पैमाने पर होने लगा, जिससे कच्चे माल और तैयार उत्पादों का वैश्विक आदान-प्रदान बढ़ा।

» कार्ल मार्क्स: परिचय और जीवन

प्रश्न 17 (आसान). कार्ल मार्क्स का जन्म किस देश में हुआ था?

उत्तर – जर्मनी

प्रश्न 18 (आसान). मार्क्स ने समाज में किस स्थिति को खत्म करने की वकालत की?

उत्तर – अत्याचार तथा शोषण

प्रश्न 19 (मध्यम). पूँजीवादी समाज में मार्क्स ने किस 'स्थिति' की बात की, और उसका एक उदाहरण दो?

उत्तर – मार्क्स ने पूँजीवादी समाज में 'अलगाव की स्थिति' की बात की। उदाहरण के लिए, मज़दूरों का अपने द्वारा बनाए गए उत्पाद पर कोई अधिकार न होना।

प्रश्न 20 (कठिन). कार्ल मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था का 'आलोचनात्मक विश्लेषण' क्यों किया?

उत्तर – मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था का आलोचनात्मक विश्लेषण इसलिए किया ताकि उसकी कमजोरियों को उजागर कर सकें और इस व्यवस्था का पतन हो सके, जिससे एक समाजवादी (अधिक समान) समाज की स्थापना की जा सके।

» मार्क्स का उत्पादन के तरीके और अलगाव का सिद्धांत

प्रश्न 21 (आसान). मार्क्स के अनुसार, 'उत्पादन के तरीके' में कौन से दो मुख्य घटक शामिल हैं?

उत्तर – उत्पादक शक्तियाँ और उत्पादन संबंध।

प्रश्न 22 (आसान). मार्क्स द्वारा बताए गए 'उत्पादन के तरीकों' के कोई दो ऐतिहासिक चरण बताइए।

उत्तर – आदिम साम्यवाद, दास प्रथा, सामंतवाद या पूँजीवाद।

प्रश्न 23 (मध्यम). पूँजीवादी व्यवस्था में 'अलगाव' (Alienation) के किन्हीं दो आयामों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – मजदूर का अपने उत्पाद से अलगाव (जो वह बनाता है) और अपने सहकर्मियों से अलगाव (प्रतिस्पर्धा के कारण)।

प्रश्न 24 (कठिन). मार्क्स के अनुसार, 'उत्पादक शक्तियाँ' और 'उत्पादन संबंध' किस प्रकार एक समाज की संरचना को निर्धारित करते हैं?
उत्तर – उत्पादक शक्तियाँ उत्पादन के भौतिक साधनों को संदर्भित करती हैं, जबकि उत्पादन संबंध ये निर्धारित करते हैं कि इन साधनों पर किसका नियंत्रण है और लोग उत्पादन प्रक्रिया में कैसे संबंधित हैं। ये मिलकर समाज की आर्थिक नींव बनाते हैं, जो सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अधिसंरचना को आकार देती है।

» वर्ग संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन

प्रश्न 25 (आसान). कार्ल मार्क्स के अनुसार, समाज में 'वर्ग' किस आधार पर बनते हैं?
उत्तर – उत्पादन प्रक्रिया में व्यक्ति की स्थिति के आधार पर।

प्रश्न 26 (आसान). 'बुर्जुआ वर्ग' से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – वह वर्ग जिसके पास उत्पादन के साधन (पूँजी, फैक्ट्रियां) होते हैं।

प्रश्न 27 (मध्यम). मार्क्स के 'वर्ग संघर्ष' का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – वर्ग संघर्ष सामाजिक परिवर्तन और क्रांति का मुख्य चालक होता है।

प्रश्न 28 (कठिन). मार्क्स के अनुसार, 'वर्ग चेतना' क्या है और यह वर्ग संघर्ष के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – वर्ग चेतना का मतलब है जब किसी वर्ग के लोग अपने साझा हितों और अपनी पहचान को समझने लगते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना वर्ग संघर्ष राजनीतिक गोलबंदी में नहीं बदल पाता और क्रांति नहीं आ पाती।

» एमिल दुर्खाइम: परिचय और सामाजिक तथ्य

प्रश्न 29 (आसान). एमिल दुर्खाइम को किस विषय के संस्थापक के रूप में जाना जाता है?
उत्तर – समाजशास्त्र (Sociology)

प्रश्न 30 (आसान). दुर्खाइम के अनुसार 'सामाजिक तथ्य' व्यक्ति के लिए कैसे होते हैं?
उत्तर – बाह्य (External) और बाध्यकारी (Coercive)

प्रश्न 31 (मध्यम). क्या किसी समाज के रीति-रिवाज 'सामाजिक तथ्य' माने जा सकते हैं? एक वाक्य में समझाइए।
उत्तर – हाँ, क्योंकि रीति-रिवाज व्यक्तिगत पसंद नहीं होते बल्कि समाज द्वारा स्थापित नियम होते हैं जो व्यक्ति के आचरण को निर्देशित करते हैं।

प्रश्न 32 (कठिन). एमिल दुर्खाइम ने समाजशास्त्र को 'वैज्ञानिक संकाय' बनाने के लिए 'सामाजिक तथ्यों' के अध्ययन पर क्यों ज़ोर दिया?
उत्तर – दुर्खाइम चाहते थे कि समाजशास्त्र भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह तथ्यों पर आधारित हो, और चूंकि 'सामाजिक तथ्य' अवलोकन योग्य (भले ही अप्रत्यक्ष रूप से) और मापने योग्य होते हैं (जैसे आत्महत्या की दर), इसलिए इनके अध्ययन से समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक आधार मिलता है।

» दुर्खाइम की समाजशास्त्रीय दृष्टि और आनुभविक अध्ययन

प्रश्न 33 (आसान). दुर्खाइम के अनुसार, समाजशास्त्र की विषय वस्तु क्या है?
उत्तर – सामाजिक तथ्यों का अध्ययन।

प्रश्न 34 (आसान). दुर्खाइम 'उद्गामी स्तर' से क्या समझाना चाहते थे?
उत्तर – यह कि व्यक्तियों के समूह से एक नई, बड़ी सामूहिक पहचान और शक्ति उभरती है।

प्रश्न 35 (मध्यम). दुर्खाइम ने समाजशास्त्र को 'आनुभविक विषय' क्यों बनाना चाहा?
उत्तर – क्योंकि वे समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक और सबूत-आधारित बनाना चाहते थे, जिसका अवलोकन और सत्यापन किया जा सके।

प्रश्न 36 (कठिन). भले ही सामाजिक घटनाएँ अमूर्त हों, फिर भी दुर्खाइम ने उनका आनुभविक अध्ययन कैसे संभव बताया? 'आत्महत्या' के उदाहरण से समझाएँ।
उत्तर – दुर्खाइम ने बताया कि भले ही सामाजिक घटनाएँ (जैसे सामूहिक पहचान) सीधे न दिखें, लेकिन उन्हें 'व्यवहार के प्रतिमानों' के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। 'आत्महत्या' के अध्ययन में उन्होंने देखा कि व्यक्तिगत आत्महत्याओं की दर में भी कुछ 'सामाजिक पैटर्न' होते हैं, जैसे कुछ समुदायों में अधिक दरें। इन दरों और पैटर्न का विश्लेषण करके उन्होंने अमूर्त सामाजिक तथ्यों का आनुभविक अध्ययन किया।

» समाज में श्रम-विभाजन: यांत्रिक और सावयवी एकता

प्रश्न 37 (आसान). आदिम समाज में कौन सी एकता पाई जाती थी?
उत्तर – यांत्रिक एकता

प्रश्न 38 (आसान). आधुनिक समाजों की मुख्य विशेषता क्या है?
उत्तर – सावयवी एकता

प्रश्न 39 (मध्यम). 'The Division of Labor in Society' पुस्तक किसने लिखी?
उत्तर – एमिल दुर्खाइम ने

प्रश्न 40 (कठिन). यांत्रिक और सावयवी एकता में कानून की प्रकृति में क्या अंतर होता है?
उत्तर – यांत्रिक एकता में कानून दमनकारी होते हैं, जबकि सावयवी एकता में कानून क्षतिपूरक (सुधारात्मक) होते हैं।

» मैक्स वेबर: परिचय और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र

प्रश्न 41 (आसान). मैक्स वेबर किस देश के समाजशास्त्री थे?
उत्तर – जर्मनी

प्रश्न 42 (आसान). वेबर के अनुसार समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – सामाजिक क्रियाओं के व्याख्यात्मक अर्थों को समझना।

प्रश्न 43 (मध्यम). 'सामाजिक क्रिया' से आप क्या समझते हैं? एक उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तर – कोई भी मानवीय व्यवहार जिसे करने वाला व्यक्ति कोई 'विशेष अर्थ' देता हो। जैसे, अगर कोई विद्यार्थी अपनी किताब पर नाम लिखता है, तो इसके पीछे 'मालिकाना हक' या 'पहचान' का अर्थ है।

प्रश्न 44 (कठिन). व्याख्यात्मक समाजशास्त्र में 'समानुभूति' (Empathetic Understanding) का क्या महत्व है?
उत्तर – समानुभूति समाजशास्त्री को दूसरों की जगह खुद को रखकर सोचने और उनकी क्रियाओं के पीछे के 'विषयगत अर्थों' व 'प्रेरणाओं' को समझने में मदद करती है, जिससे अध्ययन अधिक गहरा और सटीक होता है।

» वेबर की वस्तुनिष्ठता: मूल्य तटस्थता और समानुभूति समझ

प्रश्न 45 (आसान). Max Weber के अनुसार 'मूल्य तटस्थता' का क्या मतलब है?
उत्तर – अपनी निजी राय और मूल्यों को सामाजिक अध्ययन में शामिल न करना।

प्रश्न 46 (आसान). समानुभूति समझ के लिए समाजशास्त्री को क्या करना चाहिए?
उत्तर – खुद को दूसरों की जगह पर रखकर उनकी क्रियाओं के अर्थों को समझना।

प्रश्न 47 (मध्यम). एक समाजशास्त्री एक समुदाय की धार्मिक प्रथाओं का अध्ययन कर रहा है जिसे वह व्यक्तिगत रूप से पसंद नहीं करता। 'मूल्य तटस्थता' के संदर्भ में उसे क्या ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर – उसे अपनी व्यक्तिगत पसंद-नापसंद को अध्ययन से दूर रखना चाहिए और केवल समुदाय के सदस्यों के दृष्टिकोण और उस प्रथा के महत्व का वर्णन करना चाहिए, न कि उस पर अपनी राय थोपनी चाहिए।

प्रश्न 48 (कठिन). वेबर ने 'समानुभूति समझ' को 'वस्तुनिष्ठता' के लिए कैसे महत्वपूर्ण बताया, जबकि 'वस्तुनिष्ठता' निष्पक्षता पर जोर देती है?
उत्तर – वेबर ने तर्क दिया कि सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए लोगों के 'विषयगत अर्थों' को समझना अनिवार्य है, और यह 'समानुभूति समझ' से आता है। लेकिन 'वस्तुनिष्ठता' यह सुनिश्चित करती है कि इन 'अर्थों' को समाजशास्त्री के अपने मूल्यों या पूर्वाग्रहों से प्रभावित हुए बिना, 'तटस्थ' भाव से दर्ज और विश्लेषण किया जाए। यह एक चुनौती है जिसके लिए आत्म-अनुशासन की आवश्यकता होती है।

» आदर्श प्रारूप और सत्ता के प्रकार

प्रश्न 49 (आसान). जो सत्ता 'कानून और नियमों' पर आधारित होती है, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता।

प्रश्न 50 (आसान). मैक्स वेबर के अनुसार, 'आदर्श प्रारूप' क्या है?
उत्तर – यह विश्लेषण का एक उपकरण या मॉडल है, जो किसी सामाजिक घटना की मुख्य विशेषताओं को दर्शाता है।

प्रश्न 51 (मध्यम). अगर एक राजा इसलिए शासन करता है क्योंकि उसके पूर्वज भी राजा थे, तो यह किस प्रकार की सत्ता है? समझाएँ।
उत्तर – यह 'पारंपरिक सत्ता' है। लोग राजा की बात इसलिए मानते हैं क्योंकि यह परंपरा और रीति-रिवाज का हिस्सा है कि राजा का परिवार ही शासन करेगा।

प्रश्न 52 (कठिन). आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में मुख्य रूप से कौन-सी सत्ता पाई जाती है? क्या उसमें करिश्माई या पारंपरिक सत्ता के अंश भी हो सकते हैं? उदाहरण सहित बताएँ।
उत्तर – आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में मुख्य रूप से 'तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता' पाई जाती है, क्योंकि सरकारें और संस्थाएँ कानून और संविधान के नियमों के अनुसार चलती हैं। हाँ, उसमें 'करिश्माई सत्ता' के अंश हो सकते हैं, जैसे कोई प्रधानमंत्री अपने करिश्माई व्यक्तित्व के कारण बहुत लोकप्रिय हो जाए, लेकिन उसकी शक्ति फिर भी कानूनी ढाँचे में ही होती है। 'पारंपरिक सत्ता' के अंश भी हो सकते हैं, जैसे कुछ समाजों में संवैधानिक पद पर होने के बावजूद लोग किसी बड़े नेता की बात उसकी उम्र और अनुभव के कारण मानते हैं, जो एक तरह से परंपरा का हिस्सा बन जाता है।

» वेबर की नौकरशाही का सिद्धांत

प्रश्न 53 (आसान). नौकरशाही के सिद्धांत में 'तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि सत्ता नियमों और कानूनों पर आधारित है, न कि किसी व्यक्ति विशेष या परंपरा पर।

प्रश्न 54 (आसान). वेबर ने नौकरशाही में कौन से दो क्षेत्रों को अलग करने की बात कही है?
उत्तर – उन्होंने 'घरेलू दुनिया' (domestic world) और 'सार्वजनिक दुनिया' (public world) को अलग करने की बात कही है।

प्रश्न 55 (मध्यम). नौकरशाही में 'लिखित दस्तावेज़ों की विश्वसनीयता' क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पारदर्शिता आती है, जवाबदेही तय होती है, और भविष्य के लिए रिकॉर्ड सुरक्षित रहते हैं।

प्रश्न 56 (कठिन). मैक्स वेबर की नौकरशाही के सिद्धांत की उन दो विशेषताओं की पहचान करें जो इसे किसी 'लोकप्रिय अभिनेता के प्रशंसकों के संघ' से अलग बनाती हैं।
उत्तर – नौकरशाही में 'कार्यों का सोपानिक क्रम' और 'लिखित दस्तावेज़ों की विश्वसनीयता' होती है, जबकि प्रशंसकों के संघ में आमतौर पर ये औपचारिक संरचनाएँ नहीं होतीं। प्रशंसकों का संघ भावनाओं और व्यक्तिगत जुड़ाव पर आधारित होता है, नियमों और तर्कसंगतता पर नहीं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो, तुम्हें समझना है कि 'ज्ञानोदय' ने लोगों की सोच को कैसे बदला। एक उदाहरण देकर समझाओ।

› पहले लोग मानते थे कि राजा को भगवान ने चुना है, इसलिए उसके हर आदेश का पालन करना चाहिए, चाहे वह गलत भी लगे।

› ज्ञानोदय के बाद, लोगों ने 'तर्क' करना शुरू किया कि 'क्या राजा को सच में भगवान ने चुना है?' और 'अगर राजा गलत है, तो क्या हमें उसका विरोध नहीं करना चाहिए?'

› उन्होंने 'विवेक' का इस्तेमाल करके देखा कि 'सभी इंसान बराबर पैदा हुए हैं, तो एक व्यक्ति को दूसरे पर इतना अधिकार क्यों है?'

› इस सोच ने 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता' और 'मानवाधिकारों' के विचारों को जन्म दिया, जिससे समाज में बड़े बदलाव आए।

उत्तर – ज्ञानोदय ने अंधविश्वास और निरंकुश सत्ता पर सवाल उठाने की शक्ति दी, जिससे लोग अपने अधिकारों और तर्क पर आधारित समाज की कल्पना करने लगे।

उदाहरण 2. ज्ञानोदय ने मानव समाज में किस प्रकार के वैचारिक परिवर्तन लाए?

› पहला परिवर्तन यह था कि 'मनुष्य को ब्रह्मांड के केंद्र में स्थापित किया गया'। इसका मतलब है कि अब लोग भगवान या किसी अदृश्य शक्ति के बजाय, इंसान की क्षमता और महत्व को समझने लगे।

› दूसरा, 'विवेक को मनुष्य की मुख्य विशिष्टता का दर्जा दिया गया'। लोगों ने अपनी बुद्धि और तर्कशक्ति का उपयोग करना शुरू किया।

› तीसरा, 'विवेकपूर्ण और आलोचनात्मक सोच' को बढ़ावा मिला। अब लोग हर बात को 'क्यों' और 'कैसे' के साथ जानने लगे, न कि सिर्फ़ मान लेने लगे।

› चौथा, इससे 'धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण' का उदय हुआ। समाज में धर्म के साथ-साथ विज्ञान को भी महत्व मिलने लगा और हर बात को वैज्ञानिक सबूतों के आधार पर परखा जाने लगा।

उत्तर – ज्ञानोदय ने मानव समाज में मनुष्य को केंद्र में रखकर, विवेकपूर्ण और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया, जिससे धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ।

उदाहरण 3. फ्रांसीसी क्रांति ने 'राजनीतिक संप्रभुता' की अवधारणा को कैसे स्थापित किया?

› क्रांति से पहले: 'Divine Right of Kings' यानी राजा को भगवान से शासन का अधिकार मिला है, ऐसा माना जाता था।

› क्रांति के दौरान: लोगों ने राजा के इस अधिकार को चुनौती दी और 'जनता की इच्छा' को सबसे ऊपर रखा।

› क्रांति के बाद: 'मानवाधिकारों की घोषणा' हुई, जिसमें 'सभी नागरिकों की समानता' पर जोर दिया गया और 'सरकार लोगों द्वारा, लोगों के लिए' के विचार को बल मिला।

› परिणाम: शासन करने की शक्ति राजा से हटकर सीधे 'जनता' के हाथों में आ गई, जिससे 'राजनीतिक संप्रभुता' स्थापित हुई।

उत्तर – फ्रांसीसी क्रांति ने 'राजनीतिक संप्रभुता' को इस तरह स्थापित किया कि इसने शासन की शक्ति को 'राजा' से हटाकर 'जनता' में निहित कर दिया, जिससे जनता ही अपने शासक चुनने और अपने भाग्य का निर्धारण करने वाली सर्वोच्च शक्ति बन गई।

उदाहरण 4. औद्योगिक क्रांति के दो मुख्य पहलुओं और उनके किन्हीं दो सामाजिक प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

› पहला पहलू: 'विज्ञान तथा तकनीकी का औद्योगिक उत्पादन में व्यवस्थित प्रयोग' - इसमें नई मशीनों (जैसे स्पिनिंग जेनी) और ऊर्जा के नए स्रोतों (जैसे भाप इंजन) का बड़े पैमाने पर उत्पादन में इस्तेमाल शुरू हुआ, जिससे कम समय में ज़्यादा माल बनने लगा।

› दूसरा पहलू: 'श्रम तथा बाज़ार को नए ढंग से व बड़े पैमाने पर संगठित करने के तरीक़े' - अब लोग छोटे कारीगर के रूप में नहीं, बल्कि बड़े कारखानों में मज़दूरों के तौर पर काम करने लगे। उत्पादन सिर्फ़ स्थानीय बाज़ार के लिए नहीं, बल्कि दुनिया भर के बाज़ारों के लिए होने लगा।

› पहला सामाजिक प्रभाव: 'शहरीकरण' - काम की तलाश में लोग गाँव छोड़कर शहरों में आने लगे, जिससे शहर की आबादी तेज़ी से बढ़ी और वहाँ भीड़-भाड़ हो गई।

› दूसरा सामाजिक प्रभाव: 'सामाजिक विषमताएँ' - कारखानों के मालिकों और पूंजीपतियों के पास अपार धन आया, जबकि मज़दूरों को कम मज़दूरी और ख़राब परिस्थितियों में काम करना पड़ा, जिससे समाज में अमीर और गरीब के बीच

की खाई बहुत गहरी हो गई।

उत्तर – औद्योगिक क्रांति के दो मुख्य पहलू विज्ञान और तकनीक का प्रयोग तथा श्रम और बाज़ार का नया संगठन थे। इसके दो प्रमुख सामाजिक प्रभाव शहरीकरण और सामाजिक विषमताओं में वृद्धि थे।

उदाहरण 5. कार्ल मार्क्स ने किन विचारों के कारण अपनी मातृभूमि जर्मनी सहित कई देशों से निष्कासित किया गया?

› कार्ल मार्क्स के जीवन परिचय और उनके विचारों को समझना होगा।

› उनकी जीवनी बताती है कि उनके विचार 'क्रांतिकारी राजनीतिक' थे।

› ये विचार तत्कालीन सरकारों और व्यवस्था के खिलाफ थे।

› इसी कारण उन्हें अपनी मातृभूमि जर्मनी और अन्य देशों (जैसे ऑस्ट्रिया और फ्रांस) से निष्कासित किया गया।

उत्तर – कार्ल मार्क्स को उनके 'क्रांतिकारी राजनीतिक विचारों' के कारण अपनी मातृभूमि जर्मनी सहित ऑस्ट्रिया और फ्रांस जैसे देशों से निष्कासित किया गया।

उदाहरण 6. मार्क्स के अनुसार, 'उत्पादन के तरीके' से आप क्या समझते हैं? 'उत्पादक शक्तियों' और 'उत्पादन संबंधों' का उदाहरण देकर समझाइए।

› सबसे पहले, हम बताएंगे कि मार्क्स के लिए, समाज की अर्थव्यवस्था 'उत्पादन के तरीके' पर आधारित होती है, जो किसी भी समाज की 'नींव' है।

› फिर समझाएंगे कि 'उत्पादन के तरीके' में दो मुख्य घटक होते हैं: 'उत्पादक शक्तियाँ' और 'उत्पादन संबंध'।

› 'उत्पादक शक्तियों' का उदाहरण देंगे, जैसे 'भूमि, मजदूर, तकनीक, ऊर्जा के विभिन्न साधन (बिजली, कोयला)'। मान लीजिए, एक कपास के खेत में, खेत खुद, बीज, पानी, सूरज, और जो मजदूर काम कर रहे हैं, ये सब 'उत्पादक शक्तियाँ' हैं।

› अब 'उत्पादन संबंधों' का उदाहरण देंगे। उसी कपास के खेत में, खेत का मालिक कौन है? क्या मजदूर खेत के मालिक हैं या सिर्फ दिहाड़ी पर काम कर रहे हैं? क्या उनके बीच कोई ठेका है? ये सब 'उत्पादन संबंध' हैं जो स्वामित्व और नियंत्रण को दिखाते हैं।

उत्तर – मार्क्स के अनुसार, 'उत्पादन के तरीके' एक समाज की अर्थव्यवस्था का आधार होते हैं, जिसमें 'उत्पादक शक्तियाँ' (जैसे भूमि, मशीनें, मजदूर) और 'उत्पादन संबंध' (जैसे स्वामित्व, नियंत्रण, और मजदूरों के बीच के रिश्ते) शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, एक फैक्ट्री में, मशीनें और मजदूर 'उत्पादक शक्तियाँ' हैं, और फैक्ट्री का मालिक कौन है, मजदूरों को कितनी तनख्वाह मिलती है, ये सब 'उत्पादन संबंध' हैं।

उदाहरण 7. कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूँजीवादी समाज में कौन से दो मुख्य वर्ग होते हैं और उनके बीच संघर्ष का मुख्य कारण क्या है?

› पहला वर्ग है 'बुर्जुआ वर्ग' – 'Bourgeoisie', ये वे लोग हैं जिनके पास 'means of production' हैं, जैसे कि फैक्ट्रियां, ज़मीन, पूंजी। ये लोग समाज के मालिक होते हैं।

› दूसरा वर्ग है 'सर्वहारा वर्ग' – 'Proletariat', ये वे 'wage-labourers' हैं जो अपनी आजीविका के लिए सिर्फ अपनी शारीरिक मेहनत बेचते हैं, क्योंकि उनके पास उत्पादन के कोई साधन नहीं होते।

› इनके बीच 'संघर्ष' का मुख्य कारण यह है कि बुर्जुआ वर्ग का हित ज़्यादा से ज़्यादा मुनाफा कमाने में है, जिसके लिए वे अक्सर मजदूरों का शोषण करते हैं। वहीं, सर्वहारा वर्ग का हित अपनी मेहनत का सही दाम पाने और शोषण से मुक्ति में है। ये 'विरोधी हित' ही 'वर्ग संघर्ष' को जन्म देते हैं।

उत्तर – पूँजीवादी समाज में दो मुख्य वर्ग 'बुर्जुआ वर्ग' (पूँजीपति) और 'सर्वहारा वर्ग' (मज़दूर) होते हैं। उनके बीच संघर्ष का मुख्य कारण 'उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण' और 'विरोधी आर्थिक हित' हैं।

उदाहरण 8. एमिल दुर्खाइम के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा एक 'सामाजिक तथ्य' का उदाहरण है और क्यों? a) आपकी पसंदीदा फ़िल्म b) किसी देश का संविधान c) व्यक्तिगत नींद का पैटर्न

› सबसे पहले, हम 'सामाजिक तथ्य' की परिभाषा को याद करेंगे: 'सामाजिक तथ्य' व्यक्ति से बाह्य होते हैं और उसके आचरण को बाधित करते हैं, यानी उस पर दबाव डालते हैं।

› अब विकल्प (a) 'आपकी पसंदीदा फ़िल्म' को देखें। यह आपकी व्यक्तिगत पसंद है, यह दूसरों पर कोई दबाव नहीं डालती। तो यह 'सामाजिक तथ्य' नहीं है।

› अब विकल्प (c) 'व्यक्तिगत नींद का पैटर्न' को देखें। यह आपके शरीर की जैविक ज़रूरत है, समाज इसे सीधे तौर पर

नियंत्रित नहीं करता। तो यह भी 'सामाजिक तथ्य' नहीं है।

› अब विकल्प (b) 'किसी देश का संविधान' को देखें। संविधान नियम-कानूनों का एक संग्रह है जो हर नागरिक पर लागू होता है। यह व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करता है (जैसे हमें कानून का पालन करना होता है)। यह व्यक्ति से बाह्य है और हम सब पर दबाव डालता है।

› इसलिए, 'किसी देश का संविधान' एक 'सामाजिक तथ्य' का स्पष्ट उदाहरण है।

उत्तर – किसी देश का संविधान एक 'सामाजिक तथ्य' का उदाहरण है, क्योंकि यह व्यक्ति से बाह्य है और उसके आचरण को नियंत्रित करता है।

उदाहरण 9. दुर्खाइम ने 'आत्महत्या' का अध्ययन क्यों किया और इससे समाजशास्त्र को 'आनुभविक' विषय बनाने में कैसे मदद मिली?

› दुर्खाइम ने देखा कि 'आत्महत्या' भले ही एक व्यक्तिगत त्रासदी लगे, लेकिन विभिन्न समाजों में 'आत्महत्या की औसत दर' में पैटर्न होते हैं।

› उन्होंने पाया कि कुछ समाजों या सामाजिक समूहों में आत्महत्या की दर दूसरों की तुलना में लगातार अधिक या कम होती है।

› इन 'व्यवहार के प्रतिमानों' को देखकर दुर्खाइम ने तर्क दिया कि आत्महत्या के पीछे केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि 'सामाजिक तथ्य' भी काम करते हैं, जैसे सामाजिक एकीकरण की कमी या अधिकता।

› इस तरह, उन्होंने एक अमूर्त (abstract) सामाजिक घटना को भी 'आनुभविक' डेटा (जैसे आंकड़ों) के आधार पर अध्ययन करके दिखाया कि समाजशास्त्र भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग कर सकता है।

उत्तर – दुर्खाइम ने 'आत्महत्या' का अध्ययन यह दिखाने के लिए किया कि सामाजिक तथ्यों को, जो अमूर्त होते हैं, भी वैज्ञानिक और आनुभविक तरीकों से समझा जा सकता है। उन्होंने विभिन्न समुदायों में आत्महत्या की दरों के 'पैटर्न' का विश्लेषण करके यह साबित किया कि सामाजिक कारक व्यक्तिगत व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं, जिससे समाजशास्त्र एक 'आनुभविक विषय' के रूप में स्थापित हुआ।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक छोटा समुदाय है जहाँ हर परिवार अपनी ज़रूरत का खाना खुद उगाता है, कपड़े खुद बनाता है और अपने घर का निर्माण भी खुद ही करता है। अगर कोई परिवार समुदाय के नियम तोड़ता है, तो उसे समाज से बाहर कर दिया जाता है। दुर्खाइम के अनुसार, यह किस प्रकार की सामाजिक एकता का उदाहरण है?

› पहचानें कि क्या समुदाय के सदस्य समान गतिविधियों में संलग्न हैं या विशिष्ट हैं। यहाँ, हर परिवार 'अपनी ज़रूरत का खाना खुद उगाता है, कपड़े खुद बनाता है और अपने घर का निर्माण भी खुद ही करता है', जो समान गतिविधियों को दर्शाता है।

› देखें कि समाज में नियम तोड़ने पर कैसी प्रतिक्रिया होती है। यहाँ, 'अगर कोई परिवार समुदाय के नियम तोड़ता है, तो उसे समाज से बाहर कर दिया जाता है', जो कठोर दंडात्मक कानून का संकेत है।

› इन विशेषताओं को दुर्खाइम के दोनों प्रकार की एकता के साथ मिलाएं। समान गतिविधियाँ और कठोर दंड यांत्रिक एकता की विशेषताएँ हैं।

उत्तर – यह 'यांत्रिक एकता' (Mechanical Solidarity) का उदाहरण है।

उदाहरण 11. एक गांव का किसान सुबह जल्दी उठकर खेत पर हल चला रहा है। मैक्स वेबर के 'व्याख्यात्मक समाजशास्त्र' के अनुसार, हम उसकी इस क्रिया को कैसे समझेंगे?

› पहला कदम: किसान का 'व्यवहार' (Behavior) पहचानना - वह खेत में हल चला रहा है।

› दूसरा कदम: अब समाजशास्त्री को 'समानुभूति' (Empathy) का प्रयोग करना होगा। उसे खुद को किसान की जगह रखकर सोचना होगा।

› तीसरा कदम: किसान की क्रिया के पीछे के 'विषयगत अर्थों' (Subjective Meanings) को खोजना। क्या वह परिवार के लिए रोटी कमाने का अर्थ देखता है? क्या उसे अपनी ज़मीन से लगाव का अर्थ दिखता है? क्या यह उसकी परंपरा और कर्तव्य का अर्थ है?

› चौथा कदम: इन अर्थों को 'तटस्थ' (Neutral) रूप से दर्ज करना, बिना अपनी राय दिए।

उत्तर – किसान का हल चलाना सिर्फ एक शारीरिक क्रिया नहीं है, बल्कि उसके पीछे परिवार के प्रति जिम्मेदारी, अन्न उगाने का धर्म, और अपनी ज़मीन से जुड़ाव जैसे कई 'अर्थ' छिपे हैं। व्याख्यात्मक समाजशास्त्र हमें इन अर्थों को समझने में मदद

करता है।

उदाहरण 12. एक समाजशास्त्री गाँव में चल रही एक पुरानी परंपरा का अध्ययन कर रहा है। वह इस परंपरा को व्यक्तिगत रूप से बहुत 'पिछड़ी हुई' मानता है। वेबर की 'वस्तुनिष्ठता' के अनुसार उसे यह अध्ययन कैसे करना चाहिए?

› सबसे पहले, समाजशास्त्री को अपनी निजी राय और 'मूल्य' (कि यह परंपरा 'पिछड़ी' है) को अलग रखना होगा। यह 'मूल्य तटस्थता' का पालन करना है।

› दूसरा, उसे गाँव के लोगों से बातचीत करनी होगी और 'समानुभूति समझ' के साथ यह जानने की कोशिश करनी होगी कि उनके लिए इस परंपरा का क्या 'अर्थ' है, वे इसे क्यों निभाते हैं, इसकी उनकी ज़िंदगी में क्या जगह है।

› तीसरा, उसे इन सभी बातों को ईमानदारी से, बिना किसी निर्णय या पूर्वाग्रह के दर्ज करना होगा। उसे यह नहीं लिखना कि 'ये लोग गलत कर रहे हैं', बल्कि यह लिखना होगा कि 'उनके अनुसार इस परंपरा का यह महत्व है, और वे इसे इस कारण से निभाते हैं'।

› चौथा, उसे अपनी 'लौह संकल्पशक्ति' का अभ्यास करना होगा ताकि अध्ययन के दौरान उसकी अपनी भावनाएँ और पूर्वाग्रह उसके विश्लेषण को प्रभावित न करें।

उत्तर – वेबर की वस्तुनिष्ठता के अनुसार, समाजशास्त्री को अपनी व्यक्तिगत राय को अलग रखकर, लोगों की परंपरा के पीछे के 'अर्थों' को समझना चाहिए और उनका निष्पक्ष वर्णन करना चाहिए, बिना उन्हें 'पिछड़ा' या 'गलत' ठहराए।

उदाहरण 13. मान लीजिए एक नए देश में एक नेता को भारी समर्थन मिला है। लोग उसकी बात इसलिए मानते हैं क्योंकि वह बहुत प्रेरणादायक भाषण देता है और लगता है कि उसमें देश बदलने की असाधारण शक्ति है। इस नेता की सत्ता किस प्रकार की सत्ता के अंतर्गत आएगी? अपने उत्तर का कारण बताएँ।

› पहला कदम: हमें वेबर द्वारा परिभाषित सत्ता के तीन प्रकारों (पारंपरिक, करिश्माई, तर्कसंगत-वैधानिक) को याद करना होगा।

› दूसरा कदम: समस्या में दिए गए विवरण पर ध्यान दें। 'प्रेरणादायक भाषण', 'असाधारण शक्ति' जैसे शब्द बताते हैं कि लोग उसकी 'व्यक्तिगत विशेषताओं' के कारण उस पर विश्वास करते हैं।

› तीसरा कदम: 'व्यक्तिगत गुणों' या 'अलौकिक शक्तियों' के कारण प्राप्त सत्ता को 'करिश्माई सत्ता' कहा जाता है।

› चौथा कदम: तर्क दें कि पारंपरिक सत्ता रीति-रिवाज पर आधारित होती है, जो यहाँ नहीं दिखती। तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता कानून और नियमों पर आधारित होती है, जिसकी भी बात नहीं की गई है।

› पांचवां कदम: निष्कर्ष पर पहुँचें कि यह करिश्माई सत्ता का उदाहरण है।

उत्तर – यह 'करिश्माई सत्ता' (Charismatic Authority) का उदाहरण है, क्योंकि नेता को लोग उसकी 'असाधारण व्यक्तिगत गुणों' और 'प्रेरणादायक व्यक्तित्व' के कारण मानते हैं, न कि किसी परंपरा या कानूनी पद के कारण।

उदाहरण 14. मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की पहली दो मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

› पहला, वेबर ने बताया कि नौकरशाही में अधिकारियों के 'प्रकार्य' (functions) तय होते हैं। मतलब, 'official jurisdictional areas' होते हैं। जैसे, एक सरकारी दफ्तर में हर अधिकारी का काम पहले से तय होता है - कौन सा काम किस नियम से होगा और किसकी क्या ज़िम्मेदारी होगी। 'The regular activities required by the purposes of the office are distributed in a fixed way as official duties'. यह नहीं कि जो मन आया, वह काम कर लिया।

› दूसरा, उन्होंने 'पदों का सोपानिक क्रम' (hierarchy of offices) बताया। इसका मतलब है कि एक अधिकारी दूसरे के अधीन होता है। 'The organization of offices follows the principle of hierarchy'. ऊपर वाला अधिकारी नीचे वाले को आदेश देता है, और अगर कोई नीचे वाले के फैसले से खुश नहीं है, तो वह ऊपर वाले से अपील कर सकता है। यह एक चेन की तरह होता है।

› तीसरा, 'लिखित दस्तावेज़ों की विश्वसनीयता' (reliability of written documents)। हर काम लिखित में होता है। फाइलें बनती हैं, रिकॉर्ड रखे जाते हैं। यह नहीं कि किसी ने कुछ मुँह से कह दिया और काम हो गया। 'The management of the bureaucratic system is carried out on the basis of written documents'.

› चौथा, 'कार्यालय का प्रबंधन' (office management)। ऑफिस का काम करने के लिए खास ट्रेनिंग वाले और कुशल कर्मचारी चाहिए होते हैं। 'Since office management is a specialized and modern activity, it requires trained and skilled employees'.

› पांचवां, 'कार्यालयी आचरण' (conduct in office)। ऑफिस में कर्मचारी कैसे व्यवहार करेंगे, यह नियमों और कानूनों

से तय होता है। उनका निजी जीवन और सार्वजनिक काम अलग-अलग होते हैं। 'The official activities demand the full concentration of the employees'.

› तो, पहली दो मुख्य विशेषताएँ हैं अधिकारियों के कार्य और पदों का सोपानिक क्रम।

उत्तर – मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की पहली दो मुख्य विशेषताएँ हैं: (1) अधिकारियों के प्रकार्य (Functions of officials) और (2) पदों का सोपानकि क्रम (Hierarchy of offices).

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं कि समाजशास्त्र के उद्भव में इन तीनों क्रांतियों की क्या भूमिका थी। इनके नाम और उनके मुख्य प्रभावों को अच्छे से समझना और याद रखना।

• ज्ञानोदय एक बहुत महत्वपूर्ण अवधारणा है। जब आप इस पर उत्तर लिखें, तो 'विवेक', 'आलोचनात्मक सोच', 'धर्मनिरपेक्षता' और 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' जैसे मुख्य शब्दों का उपयोग ज़रूर करें।

• फ्रांसीसी क्रांति के सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों पर अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं। 'राजनीतिक संप्रभुता', 'मानवाधिकार' और 'विशेषाधिकारों की समाप्ति' जैसे मुख्य बिंदुओं को विस्तार से समझना और उन्हें अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास करना बहुत ज़रूरी है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाजशास्त्र के उद्भव की पृष्ठभूमि को समझने में मदद करती है। औद्योगिक क्रांति के पहलुओं और सामाजिक प्रभावों को बिंदुओं में याद रखना।

• कार्ल मार्क्स के 'अलगाव' (alienation) की अवधारणा और पूँजीवाद के उनके विश्लेषण पर प्रश्न अक्सर आते हैं, इसे ध्यान से समझो।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'उत्पादन के तरीके' के सभी चरणों और 'अलगाव' के विभिन्न पहलुओं को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह समझ लें। अक्सर इन पर सीधे प्रश्न आते हैं।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। मार्क्स के 'वर्ग संघर्ष' के सिद्धांत को 'उत्पादन प्रक्रिया', 'बुर्जुआ' और 'सर्वहारा' शब्दों के साथ जोड़कर समझें और लिखें। 'सामाजिक परिवर्तन' में इसकी भूमिका पर ज़रूर ध्यान दें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'सामाजिक तथ्य' की परिभाषा और उसके उदाहरण अक्सर सीधे सवाल के रूप में पूछे जाते हैं।

• यांत्रिक एकता और सावयवी एकता के बीच अंतर को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने का अभ्यास करें, यह अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछा जाता है।

• मैक्स वेबर का 'व्याख्यात्मक समाजशास्त्र' और 'सामाजिक क्रिया' की अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है। इन्हें अच्छे से समझ कर उदाहरणों के साथ लिखने का अभ्यास करें।

• वेबर की नौकरशाही की विशेषताओं पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। हर विशेषता को उदाहरण के साथ याद रखें और 'तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता' शब्द को ज़रूर इस्तेमाल करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› समाजशास्त्र का उद्भव: ज्ञानोदय, फ्रांसीसी क्रांति, औद्योगिक क्रांति।

› ज्ञानोदय: विवेक का युग, मनुष्य केंद्र में, वैज्ञानिक-आलोचनात्मक सोच।

› फ्रांसीसी क्रांति (1789): राजनीतिक संप्रभुता, मानवाधिकार, जन्मजात विशेषाधिकारों की समाप्ति, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व.

› औद्योगिक क्रांति: विज्ञान-तकनीक, विशाल कारखाने, शहरीकरण, सामाजिक विषमताएँ।

› कार्ल मार्क्स: जर्मनी, क्रांतिकारी विचार, शोषण के विरोधी, वैज्ञानिक समाजवाद, पूँजीवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण, अलगाव की अवधारणा।

› मार्क्स का उत्पादन के तरीके (आदिम साम्यवाद, दास प्रथा, सामंतवाद, पूँजीवाद) और पूँजीवाद में अलगाव।
› मार्क्स: वर्ग संघर्ष, उत्पादन प्रक्रिया आधारित; बुर्जुआ-सर्वहारा; सामाजिक परिवर्तन का चालक।
› एमिल दुर्खाइम: समाजशास्त्र के संस्थापक; 'सामाजिक तथ्य' - व्यक्ति से बाह्य, बाध्यकारी।
› दुर्खीम ने यांत्रिक (समानता) और सावयवी (निर्भरता) एकता में समाज बांटा।
› मैक्स वेबर: व्याख्यात्मक समाजशास्त्र, सामाजिक क्रिया के 'अर्थ' व समानुभूति समझना।
› नौकरशाही = तर्कसंगत-वैधानिक सत्ता, तय कार्य, सोपानिक क्रम, लिखित दस्तावेज़, नियमबद्ध आचरण।